International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप : मुगलों के खिलाफ स्वाधीनता और आत्मसम्मान का एतिहासिक संघर्ष

प्रो. ऋतु पटेल

गेस्ट फैकल्टी (इतिहास)

राजकीय बांगड़ महाविद्यालय कैम्पस, पाली

शोधसार (Abstract):- 16 वी शताब्दी में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप के समकालिक मुग़ल बादशाह अकबर था, जिसने हिन्दुओ के साथ सुलह- ए- कुल की नीति अपनायी | जिसका उदेश्य मुग़ल सत्ता को स्थायित्व तथा अफ़ग़ान संकट से सुरक्षा था | इस समय मुग़ल साम्राज्य अपनी विस्तारवादी नीति के तहत पुरे भारत को अपने साम्राज्य में मिलाना चाहता था | वही महाराणा प्रताप ने अपनी क्षेत्रीय स्वंतत्रता अपने राजपूत स्वाभिमान व मातृभूमि को सर्वोपरि रखा | महाराणा प्रताप द्वारा मुगलों के विरुद्ध हल्दीघाटी के युद्ध से लेकर दिवेर के युद्ध (1582) तक की गयी रणनीतियो छापामार युद्ध पद्धति का ऐतिहासिक साक्ष्यो के आधार पर पूर्ण मूल्याकंन करेंगे |

मुख्य शब्द :- महाराणा प्रताप मुगल साम्राज्य, हल्दीघाटी का युद्ध, छापामार युद्ध पद्धति, आत्मसम्मान, स्वंतत्रता |

1. **प्रस्तावना:-** इस भारतीय महादीप में कितने राजवंशो का उत्थान तथा पतन हुआ, लेकिन सभी ने किसी न किसी तरह अपनी सम्प्रभुता तथा अस्मिता के लिए संघर्ष किया | वैसे ही मेवाड़ के वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप, जिनका राज्यभिषेक 28 फरवरी 1572 को हुआ | उस समय तक उत्तर भारत के अधिकांश राजा महाराजा मुग़ल सत्ता के अधीन हो चुके थे, या फिर वैवाहिक संबंधो के माध्यम से कुटनीतिक संध्या कर चुके थे | अकबर ने अपनी सुलह- ए - कुल की नीति के अंतर्गत चार शांति दूत / शिष्ट मंडल, महाराणा प्रताप के दरबार में भेजे |

(i) जलाल खान कुची (1572)

(ii) मानसिंह कछवाह (1573)

(iii) भगवंत दास (1573)

(iv) टोडरमल (1573)

यह चारो ही असफल रहे, जिसके कारण आगे चलकर तीन बड़े युद्ध हुए |

इन अभियानों की असफलता पर अब्दुल रहीम खानखाना ने कहा था कि " तुर्की नष्ट हो जायेंगा,, परन्तु महाराणा प्रताप के वचन व स्वाभिमान शाशवत रहेगा "

2. **हल्दीघाटी का युद्ध (1576)** :- शिष्ट मंडलों की असफलता के बाद अकबर ने युद्ध की तैयारीयां शुरू की तथा अजमेर को केंद्र बनाकर वहा मैग्जिन दुर्ग स्थापित किया, एवं मानसिंह को सम्पूर्ण अभियान की जिम्मेदारी सौंपी | वही दूसरी और महाराणा प्रताप ने भीलो के साथ तथा अपने पडोसी राजपूत शासको, जमीदारो, ठाकुरों से सहायता की अपील की वह सेना संगठीत की | इसी तरह 18 जून 1576 को हल्दीघाटी में दोनों सेनाओ के मध्य युद्ध हुआ |
छापामार युद्ध पद्धति :- (अरावली पहाड़िया व सघन घने वृक्षों ने एक सुरक्षा कवच का कार्य किया तथा महाराणा प्रताप की सेना ने गुरिल्ला युद्ध शुरू किया |

अब्दुल कादिर बंदायूनी अब्दुल फजल युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी बंदायूनी ने गोगुन्दा का युद्ध कहा वही अब्दुल फजल ने आईने अकबरी में खमनौर का युद्ध कहा |

वीर विनोद के कवि श्यामलदास के अनुसार युद्ध में सेना अनुपात 1:4 थी, अर्थात 20,000 (महाराणा प्रताप) तथा 80,000 मुगलों की सेना थी |
इस तरह एक अनिर्यनित युद्ध समाप्त हुआ |

हल्दीघाटी युद्ध की असफलता के बाद मुग़ल सेना ने कुम्भलगढ़ पर पांच अभियान हुये इसके बाद दिवेर का युद्ध हुआ|

3. दिवेर का युद्ध (1582) :-

कुम्भलगढ़ युद्ध के उपरांत अकबर ने अपनी उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिमी सीमा को मजबूत करने के उद्देश्य से चौकिया स्थापित की-

(i) देबारी (उदयपुर)
(ii) देसुरी (पाली)
(iii) दिवेर (राजसमन्द)
(iv) देवल (डुंगरपुर)

इस प्रकार मुगलो का नेतृत्व काका सुल्तान ने किया वही मेवाड़ की सेना का नेतृत्व अमरसिंह एवं भामाशाह ने किया |

भामाशाह :- महाराणा प्रताप की भेंट चुलिया गाँव में ताराचंद के पुत्र भामाशाह से हुई, जिसने महाराणा प्रताप को 25 लाख रुपये, 2000 स्वर्ण अशफिर्या भेंट की | इस कारण भामाशाह को दानवीर / मेवाड़ का उध्दारक कहा जाता है इस भेंट के कारण महाराणा का आर्थिक संकट दूर हुआ |

दोनों सेनाओ के मध्य दिवेर का युद्ध शुरू हुआ, इस युद्ध में काका सुल्तान का अमरसिंह द्वारा वध किया गया, मुग़ल पराजित हुए |

जेम्स रॉड ने इसे मेवाड़ का मैंराथन कहा था |

इस युद्ध के बाद मेवाड़ सेना ने पूर्व में खोये हुए अपने क्षेत्रो कुम्भलगढ़, जावर, चावंड को प्राप्त किया तथा महाराणा ने चावंड को अपनी राजधानी बनाया | इस ऐतिहासिक जीत के बाद मुगलों की 36 ठिकाने महाराणा प्रताप के नियंत्रण में आ गए |

4. प्रमुख बिन्दु :-

1. **स्वंतत्रता और स्वाभिमान** :- महाराणा प्रताप ने यह सिद्ध कर दिया कि कितनी भी कठिन परिस्थतियो में मातृभूमि की स्वंतत्रता व उसके गौरव की रक्षा करना ही एक सर्वोच्च धर्म है | उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थतियो का सामना करने के बाद भी मुग़ल अधीनता स्वीकार नहीं की | उन्होंने अपने आत्मसम्मान को सर्वोपरि रखा |
2. **साहस और नेतृत्व :-** हल्दीघाटी युद्ध व् उनकी गोरिल्ला युद्ध नीति ने यह सिद्ध कर दिया की विपरीत परिस्थतियो में भी साहस, रणनीति और दृढ़ संकल्प के साथ सफलता प्राप्त की जा सकती है |
3. **प्रेंरणात्मक राष्ट्रीय योगदान :-** महाराणा प्रताप का संघर्ष स्वंतत्रता तथा राष्ट्रभक्ति के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है| उनके जीवन से स्वंतत्रता संग्राम के नेताओ और भारतीयों ने प्रेरणा ली |

5. **निष्कर्ष** :-

महाराणा प्रताप का मुग़लो के साथ संघर्ष एक क्षेत्रीय राजा का साम्राज्यवादी शक्ति के विरुद्ध प्रतिरोध नहीं था बल्कि न्युनतम संसाधनों के साथ लड़ी गई अपनी मातृभूमि स्वंतत्रता तथा आत्मसम्मान की लड़ाई थी 1585 ई. के बाद अकबर ने मेवाड़ पर अभियान बंद कर दिये, जिसके परिणाम स्वरुप महाराणा ने अपने सम्पूर्ण खोए हुए साम्राज्य पर पूर्ण अधिकारी कर लिया | महाराणा प्रताप के जीवन से यह सिद्ध होता है कि दृढ़इच्छाशक्ति और जन- सहयोग से बड़े से बड़े विशाल साम्रज्यवादी शक्ति को चुनौती का सामना किया जा सकता है |

कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " Annals and Antiquities of Rajasthan " में महाराणा प्रताप की तुलना ग्रीक इतिहास से की है | इसमें हल्दीघाटी युद्ध की तुलना धर्मोपल्ली युद्ध से की थी |

संदर्भ - ग्रन्थ सूची :-

1. डॉ. गोपीनाथ शर्मा :- मेवाड एंड द मुग़ल एम्परर्स अध्याय 5 (आगरा, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, 1954) पृष्ट संख्या - 81 – 121
2. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा :- उदयपुर राज्य का इतिहास (अजमेर, वैदिक यंत्रालय, 1932) पृष्ट संख्या - 432
3. केशरी सिंह :- महाराणा प्रताप : द हीरो ऑफ़ हल्दीघाटी (जोधपुर, राजस्थान ग्रन्थागर) पृष्ट संख्या- 15 – 35
4. कालूराम शर्मा :- राजस्थान का इतिहास (जयपुर, श्याम प्रकाशन, 1960) पृष्ट संख्या- 204-211